डॉ. शरद कुमार जैन
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667 (उत्तराखंड)

निदेशक की कलम से.....

प्रिय पाठकों, मुझे यह कहते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की गत वर्षों की भांति इस बार भी हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर पिछले 25 वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रही अपनी वार्षिक गृह पत्रिका ''प्रवाहिनी'' के 26वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका में संस्थान के ही नहीं अपितु संस्थानेत्तर प्रबुद्ध लेखकों की रचनाओं को भी स्थान दिया गया है। प्रवाहिनी के प्रत्येक अंक में हमारा यह प्रयास रहता है कि इसमें संकलित लेखों को भाषा और साहित्य संबंधी विषयों तक ही सीमित न रखा जाए अपितु विज्ञान तथा तकनीकी के विद्वानों और विशेषज्ञों के विचारों और उनके द्वारा किए जा रहे अभिनव प्रयासों तथा नई–नई संकल्पनाओं आदि को भी समाहित किया जाए। इसी क्रम को जारी रखते हुए प्रस्तुत अंक में कहानी, कविताएं, ज्ञान–विज्ञान आदि विषयों से जुड़ी मनोरंजक, प्रेरणादायक तथा उपयोगी रचनाओं को शामिल किया गया है। हमारा प्रयास रहता है कि रचनाओं की भाषा सरल व सुबोध हो जिससे हर वर्ग का पाठक लाभान्वित हो सके। आशा है यह अंक सुधी पाठकों को रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी लगेगा।

मुझे यह कहते हुए अत्यन्त खुशी हो रही है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति की कार्य संस्कृति वाला हमारा संस्थान आज अपने शोध एवं विकास कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ–साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी निरंतर आगे बढ़ रहा है। संस्थान के पदाधिकारियों की हिंदी लेखन रूचि में निरंतर वृद्धि हो रही है और वे प्रशासनिक कार्यों में ही नहीं अपितु वैज्ञानिक कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का अपेक्षानुरूप प्रयोग कर रहे हैं।

किसी राष्ट्र की प्रगति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हमारे देश में कई भाषाएं बोली जाती हैं परन्तु उनमें से हिंदी एक ऐसी भाषा है जो देश भर के विभिन्न भाषा–भाषी लोगों को एक–दूसरे के निकट लाती है। हिंदी भाषा को देश के अधिकतर लोग बोल व समझ सकते हैं। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता की भाषा, देश की संपर्क भाषा और जनभाषा भी है। इसके इन्हीं सब गुणों को ध्यान में रखकर इसे राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। यह एक ऐसी भाषा है जो पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से लेकर विदेशों तक में बोली व समझी जाती है। अतः हिंदी आज अखिल भारतीय भाषा के साथ–साथ विश्व के अनेक देशों में बोली जाने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने की ओर अग्रसर है। मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करना चाहूंगा कि वे अपने सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का बढ़–चढ़कर प्रयोग करें और इसके प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन में अपेक्षित योगदान दें ताकि राजभाषा हिंदी दिन–दुगनी, रात चौगुनी तरक्की करे और खूब फलती–फूलती रहे।

मैं पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन कार्यों से जुड़े सभी पदाधिकारियों को बधाई देता हूं। समस्त प्रबुद्ध लेखकगण जो अपने लेख एवं रचनाएं भेजकर ''प्रवाहिनी'' के प्रकाशन में योगदान दे रहे हैं, वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

शरद जैन

(शरद कुमार जैन)